2488
Story Dev
109

KONKANI ITIHAS ANI SANSKRITI SAMSTHAN
9-4-09/04

WORLD KONKANI CENTRE LIBRARY ✦ विश्व कोंकणी ग्रंथालय
109

जय श्री गणेश

जय श्रीराम

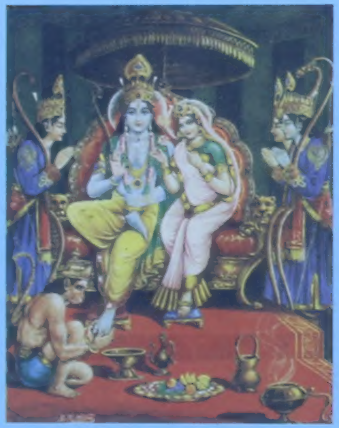

जय श्री गोश्रीपुरेश

त्वमेव माता च पिता त्वमेव। त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव। त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।

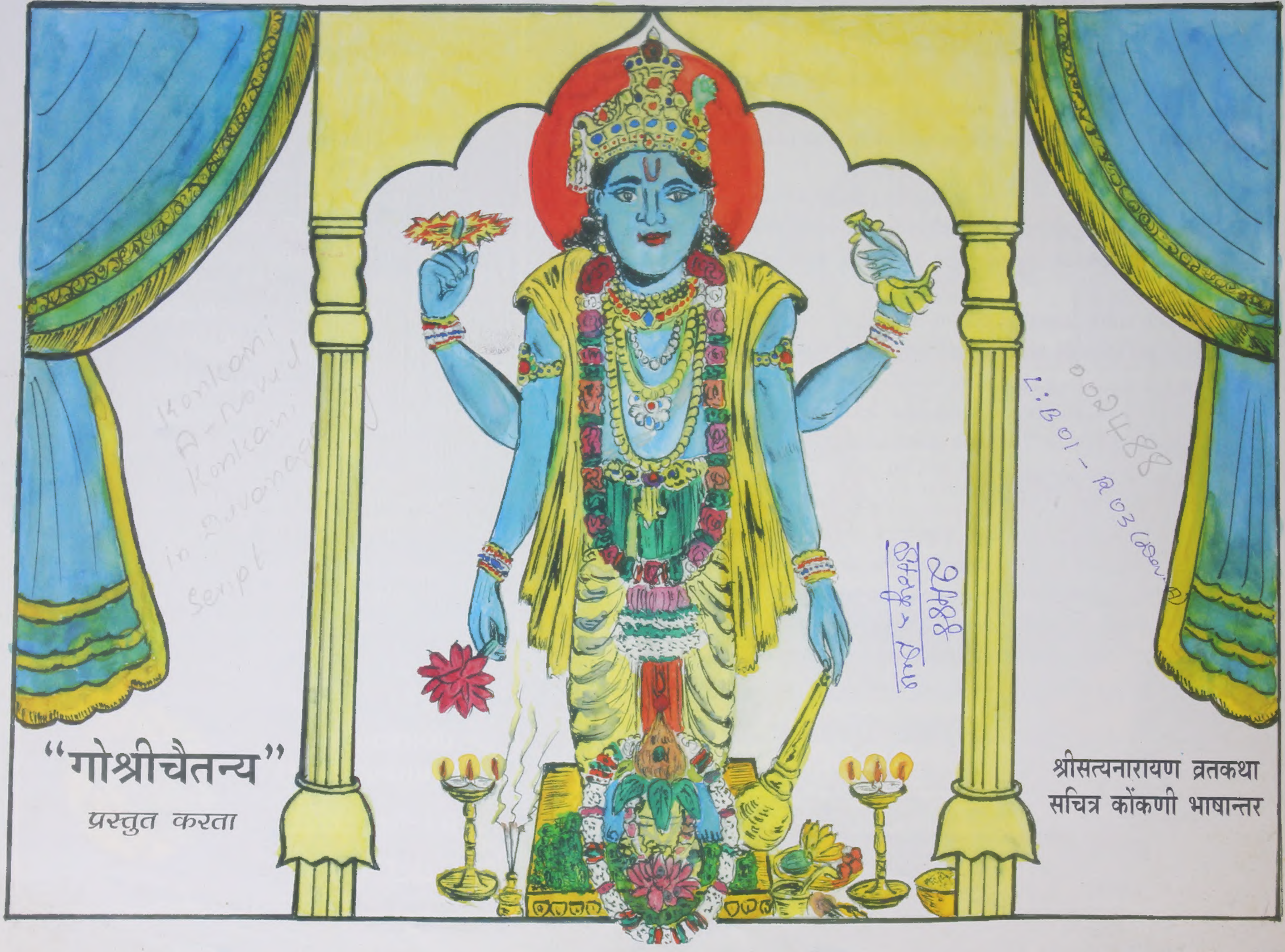

A, GOS 'P04
002488
L:B01 - R03 (Dev. A)
2488

गोश्रीचैतन्य प्रसिद्धीकरण
Gosrichaitanya Publication

स्पन्दन - 1 माघ 6,1925
(No.1, January 26, 2004)

चित्र अनि कोंकणी भाषान्तर
(Illustrations & Konkani Translation)
गोश्रीपुरं हरिकुमार (Gosripuram Harikumar)

भाषान्तर संशोधन (Translation Review)
श्री. एल. कृष्ण भट्ट (Sri. L. Krishna Bhat)
मुख्य अर्चक, कोच्चि तिरुमल देवस्थानं
Melshanthi, Kochi Thirumala Devaswom Temple

श्री. बी. सदानन्द प्रभु. एम. कोम, कोविद (संस्कृत)
Sri. B. Sadananda Prabhu M.Com, Kovid (Sanskrit)

प्रसादक (PUBLISHERS)
गोश्रीचैतन्य GOSRICHAITANYA
(एक चारिटेबल ट्रष्ट) (A Charitable Trust)
4/1369, षष्टी परम्ब, कोच्चि - 682 002, केरळ

TRUSTEES
जी. बालगोपाल शेणाय (G. Balagopal Shenoy)
अनिलकुमार एन. प्रभु (Anilkumar N. Prabhu)
एस. योगीन्दुनाथ किणी (S. Yogindunath Kini)
एस. चित्तरंजन नायक (S. Chittaranjan Nayak)

Design : Krishna Prasad, Palluruthy
Printers : Modern Graphics, Ernakulam

मोल - 25 रुपया Price - Rs. 25/-

All rights reserved to publishers only.

श्री सत्यनारायण व्रतकथा
सचित्र कोंकणी भाषान्तर

नैमिषारण्य, एक निबिड वन, अनि पुण्यस्थल। हंगा शौनकादि मुनिजन वासु करताले। कलिकाल दोष (कलिकल्मष) जाव्ना म्हळेले तँ ह्या क्षेत्राचे प्राधान्य। श्री सूत ऋषि थंगा ऐलेले समयार शौनकादि महर्ष्यानि कलिकाला कष्ट निवारण कोर्चे कसि म्होणु निंगीले। श्री सत्यनारायणाले व्रत अनुष्ठान कोर्नु ते व्रताचि कथा ऐकिलार कष्ट दूर जत्ता अनि मुक्ति मेळ्ता म्होणु श्री सूत महर्षीन संगीले। तें व्रत कस्सलें, कस्सि कोर्चे, कोण कोणे अनुष्ठान केलेलें अस्सि म्होणु लगेन विवरण केलें।।

स्कन्द पुराणान्तु श्री सत्यनारयण व्रतकथा वर्णन केल्या। व्यास महर्षीन बरेलेलें (रचित केलेले) 18 पुराणान्तु दवोर्नु होड पुराण तँ स्कन्दपुराण। तंतु 81100 श्लोक अस्स । "महाभारत" इतिहास मात्र तँ हजाकय चढ श्लोक एंचो ग्रन्थु (100000 श्लोक)। असि अस्सिले बृहत् अनि उत्तम पुराणान्तुले रेवा खण्डान्तु (विभागान्तु) तँ 5 अध्यायान्तु श्री सत्यनारायण व्रतकथा विवरण केल्या।।

भारतान्तुले अनेक संस्थानान्तुले अनेक घरकडेय, कार्यालयान्तूय यें व्रतानुष्ठान अनि कथा पारायण करताय। सामुहिक जाव्नु देवस्थानान्तुय कर्ताति । विदेशान्तूय ह्या व्रताचो प्रचारु चढु जाव्नु एत्ता।।

सत्यनारायण व्रत कथेन सगटांकय अभिवृद्धि जांका म्हळेले उद्देशान, सान्न चेर्डुवांक मनान्तु कोर्नु दिंचे उद्देशान, कोंकणी भाषा वढुका म्हळेले उद्देशान, हयें चित्रकथा रूपान प्रसिद्धीकरण करतात् ।।

WORLD KONKANI LIBRARY
Accn No : 002488

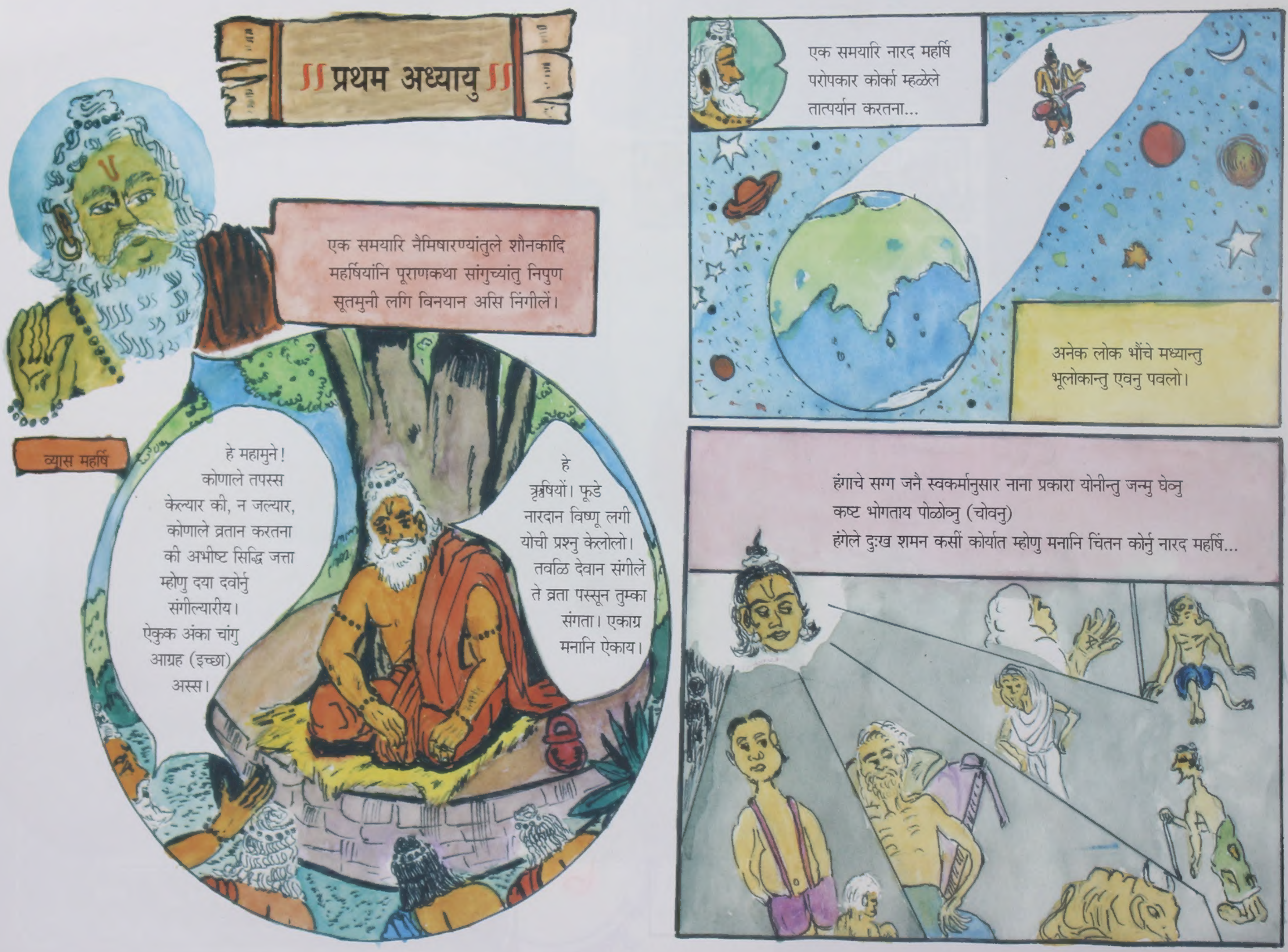

॥ प्रथम अध्यायु ॥
एक समयारि नैमिषारण्यांतुले शौनकादि महर्षियांनि पूराणकथा सांगुच्यांतु निपुण सूतमुनी लगि विनयान असि निंगीलें।
व्यास महर्षि
हे महामुने! कोणाले तपस्स केल्यार की, न जल्यार, कोणाले व्रतान करतना की अभीष्ट सिद्धि जत्ता म्होणु दया दवोंनु संगील्यारीय। ऐकुक अंका चांगु आग्रह (इच्छा) अस्स।
हे ऋषियों। फूडे नारदान विष्णू लगी योची प्रश्नु केलोलो। तवळि देवान संगीलें ते व्रता पस्सून तुम्का संगता। एकाग्र मनानि ऐकाय।
एक समयारि नारद महर्षि परोपकार कोर्का म्हळेले तात्पर्यान करतना...
अनेक लोक भौंचे मध्यान्तु भूलोकान्तु एवनु पवलो।
हंगाचे सग्ग जनै स्वकर्मानुसार नाना प्रकारा योनीन्तु जन्मु घेव्नु कष्ट भोगताय पोळोव्नु (चोवनु)
हंगेले दुःख शमन कसीं कोर्यात म्होणु मनानि चिंतन कोर्नु नारद महर्षि...

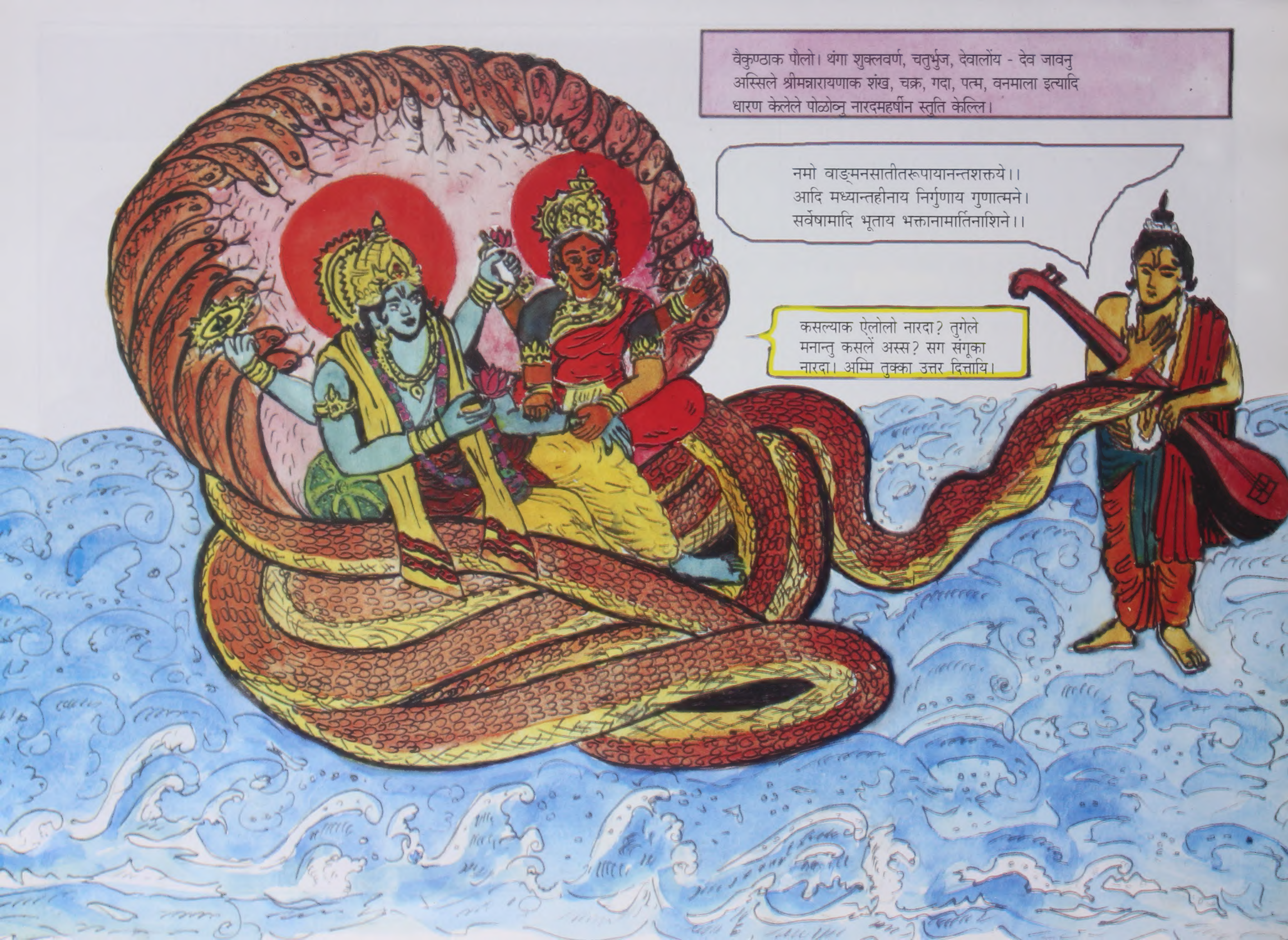
वैकुण्ठाक पौलो। थंगा शुक्लवर्ण, चतुर्भुज, देवालोंय - देव जावनु अस्सिले श्रीमन्नारायणाक शंख, चक्र, गदा, पत्म, वनमाला इत्यादि धारण केलेले पोळोव्नु नारदमहर्षीन स्तुति केल्लि।
नमो वाङ्मनसातीतरूपायानन्तशक्तये।। आदि मध्यान्तहीनाय निर्गुणाय गुणात्मने। सर्वेषामादि भूताय भक्तानामार्तिनाशिने।।
कसल्याक ऐलोलो नारदा? तुगेले मनान्तु कसलें अस्स? सग संगूका नारदा। अम्मि तुक्का उत्तर दित्तायि।

नारदु : मृत्युलोकान्तु सग प्राणीय अनेक प्रकाराचे कष्टान- दुःख भोगताय। तें नन्तना तनतनी केलेले पाप हेतु जावनु अनेक योनीन्तु जन्मु घेवनु केलेले पापाचे फल भोगताय। हे भगवन्! हंगेलें कष्ट निवारण कोरुक कसलोय सरळ उपायु दया दोवोर्नु मेगे लगी संगील्यारीय। ऐकुक व्होडी इच्छा अस्स।

देवु : वत्स नारद। संसाराचे प्राणियालें हिता खतीर तूवें अति उत्तम प्रश्नु तँ निंगील्यां। कष्टान्तु थकून मुक्त जंवचो उपायु संगता। श्रद्धेन ऐकुका। प्रिय नारद! तुजेरी अस्सिलें स्नेहान् , तें व्रत हांव संगता।
मृत्यु लोकान्तूय स्वर्गलोकान्तूय दुर्लभ अस्सिले एक व्रत अस्स। नाम तजे सत्यनारायण व्रत। हे वत्स! तें व्रत विधि प्रकार अनुष्ठान कोर्चे मनुष्य तत्काल सर्व सुख भोगूनु उपरान्ते मोक्षु प्राप्त करतात। तीं मृत्युलोकाक वापस एनात।

नारदु : ह्यें व्रत अनुष्ठान केलारी अस्सिलें फल कसलें? क्रमु कसलो? यें व्रत अनुष्ठान केलेलें कोणे? स्वल्प विस्तार कोर्नु संगूका। मगीरि येवंय संगात की यें कोर्चे केद्दाणा?

देवु : दुःख,शोक आदी शमन कोर्चे; धन, धान्य वर्द्धन कोर्चे; सौभाग्य - संतति दिंचे; सर्वत्र विजय मेळचे व्रत यें। खंचेय एक दिस्सा, भक्ति - श्रध्दायुक्त जावनु, प्रदोषकालारी, ब्राह्मण अनि बन्धु-बान्धव मेळनु धर्मतत्पर जावनु सत्यनारायण देवाली पूजन कोर्का। भंक्तीन सपाद निवेदु समर्पूका। पिक्कलीं केळीं, तूप, दूध अनि गोवा रुल्लांव अनि सक्कर (गोंवा रुल्लांव न जल्यार वोर्वा पिटीय, सक्कर न जल्यार गोडय)
सवाय लेकान काणु पाचक कोर्नु निवेदु समर्पूका। ब्राह्मणांक दक्षिणा दीव्नु बन्धु जना लगि बेसून कथा ऐकूका। ब्राह्मण अनि बन्धु जनांक भोजन कोरोंवका। भक्तीन स्वयं भोजन कोर्का। नाँचु अनी कीर्तन कोर्का।
सत्यनारायण देवाक् स्मरण कोर्नु तंगतंगेले घर्ल्याक वच्चें। अस्सि कोर्चे मनुष्यांक मनांतुलि सर्व इच्छा पूर्ण जत्तली। विशेष जाव्नु कलियुगान्तु भुमीचेरी असिल्यांक यो एकु सरळ उपाय तँ।

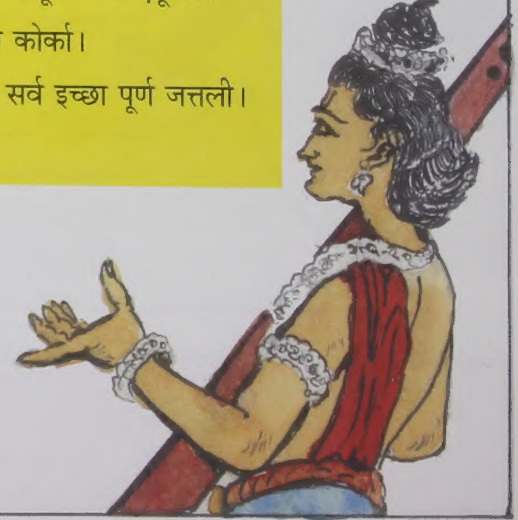

॥ सत्यनारायण व्रत कथेचे पूजन विधि वर्णन कोर्चे प्रथम अध्यायु ॥

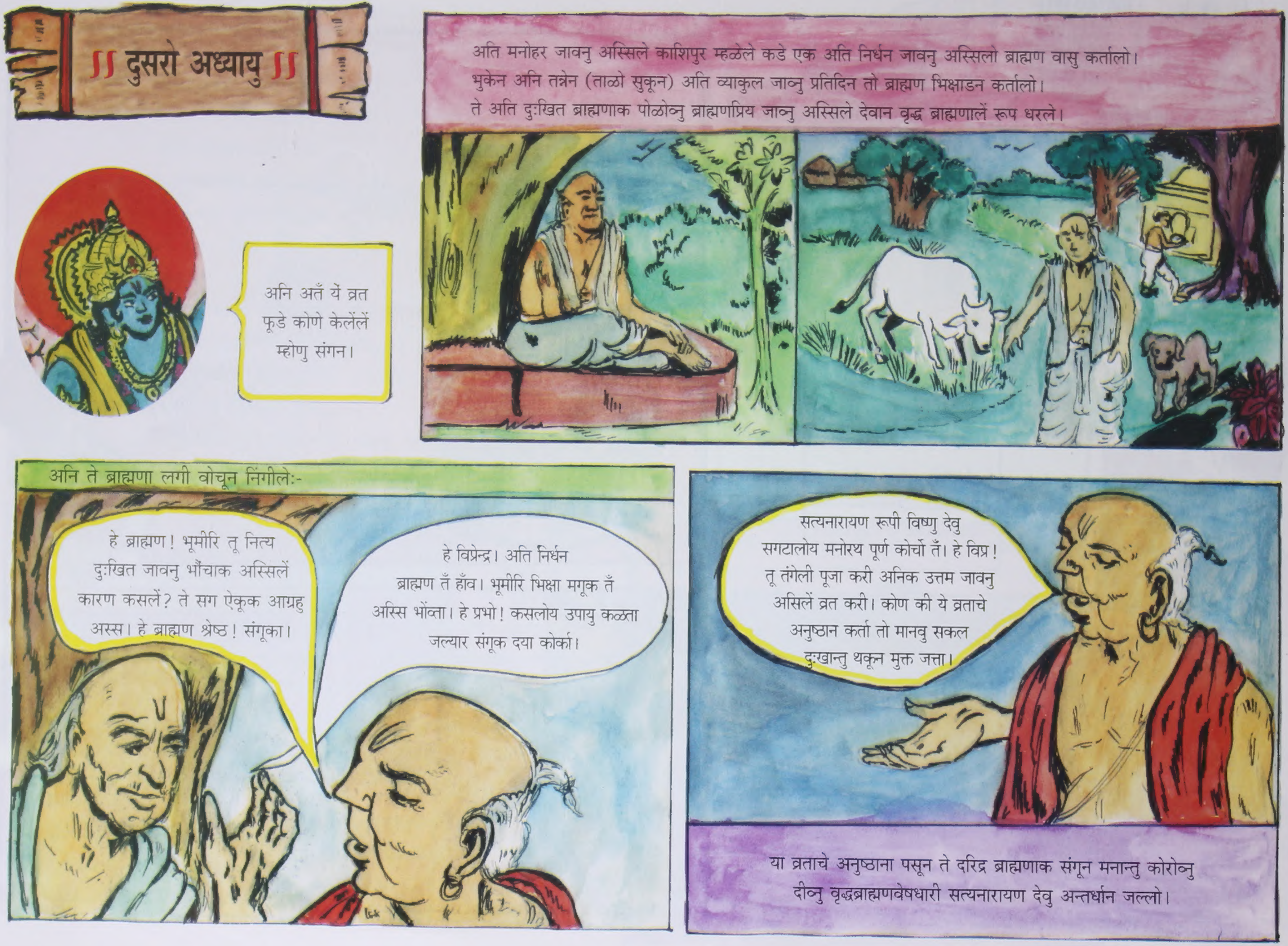
॥ दुसरो अध्यायु ॥
अनि अतँ यें व्रत फूडे कोणे केलेंलें म्होणु संगन।
अति मनोहर जावनु अस्सिले काशिपुर म्हळेले कडे एक अति निर्धन जावनु अस्सिलो ब्राह्मण वासु कर्तालो। भुकेन अनि तन्नेन (ताळो सुकून) अति व्याकुल जाव्नु प्रतिदिन तो ब्राह्मण भिक्षाडन कर्तालो। ते अति दुःखित ब्राह्मणाक पोळोव्नु ब्राह्मणप्रिय जाव्नु अस्सिले देवान वृद्ध ब्राह्मणालें रूप धरले।
अनि ते ब्राह्मणा लगी वोचून निंगीलेः-
हे ब्राह्मण! भूमीरि तू नित्य दुःखित जावनु भौंचाक अस्सिलें कारण कसलें? ते सग ऐकूक आग्रह अस्स। हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! संगूका।
हे विप्रेन्द्र। अति निर्धन ब्राह्मण तँ हाँव। भूमीरि भिक्षा मगूक तँ अस्सि भोंव्ता। हे प्रभो! कसलोय उपायु कळता जल्यार संगूक दया कोर्का।
सत्यनारायण रूपी विष्णु देवु सगटालोय मनोरथ पूर्ण कोर्चो तँ। हे विप्र! तू तंगेली पूजा करी अनिक उत्तम जावनु असिलें व्रत करी। कोण की ये व्रताचे अनुष्ठान कर्ता तो मानवु सकल दुःखान्तु थकून मुक्त जत्ता।
या व्रताचे अनुष्ठाना पसून ते दरिद्र ब्राह्मणाक संगून मनान्तु कोरोव्नु दीव्नु वृद्धब्राह्मणवेषधारी सत्यनारायण देवु अन्तर्धान जल्लो।

ब्राह्मणान संगीलें व्रत कोर्चे कसिं म्हळेलें विचारान करतना तेदूस रत्ती ब्राह्मणाक नीद पळेना।
अनन्तर प्रातः कालाक उठावनु "हांव सत्यनारायण व्रत करतलो" म्होणु निश्चयु कोर्नु भिक्षेक भायर सर्लो। ते दिवसु ब्राह्मणाक अधिक धन मेळे।
तजान बन्धु-बान्धव ओटु मेळनु सत्यनारायण व्रताचे अनुष्ठान केलें। व्रतानुष्ठानाचे प्रभावान...
.....तो ब्राह्मणश्रेष्ठु सर्व दुःखान्तु थकून विमुक्त जलो। ऐश्वर्यवन्तु जल्लो। ते दिवसु थक्कून प्रतिमासान्तूयी, ते ब्राह्मणान, व्रताचे अनुष्ठान कोरूक प्रारम्भु केल्लो। तस्सी तो ब्राह्मणु सत्यनारायण देवाले व्रत कोर्नु, सर्वपापान्तु थक्कुनूय विमुक्त जल्लो। तका दुर्लभ जावनु अस्सिलो मोक्षूय मेळो। भूमीरि कोण यें व्रत अनुष्ठान करता की तो सर्व दुःखान्तु थकुनूयी विमुक्त जत्ता। अस्सि श्रीमन्नारायणान नारदा लगि संगीलेलें सग हावें तुंचे लगि संगीला। अनीक कसलें संगूक अस्स?
हे मुनि! ते ब्राह्मणानन्तर पृथिवीरि कोण कोणे यें व्रत केल्यां? तें सग - एकूक अंका इच्छा अस्स। मनान्तु श्रद्धाय उत्पन्न जत्ता।
हे महर्षियों! यें व्रत कोण कोणें केल्या की तज्जे पसून संगता। तुम्ही ऐकूका। एक समयारी तो श्रेष्ठु ब्राह्मणु तगेले शक्ति तकीत बन्धु बान्धव सहित यें व्रत कोरूक उद्यत जल्लो। ते वेळारि एकु रकूड विक्कुचो थंगा एवनु पवलो।

रकडा काटु भायर दवोर्नु तो ब्राह्मणाले घरान्तु चोळो।
चाँग तन्नेन करतना तो व्याकुल अस्सिलो। ब्राह्मणु व्रत कर्ता पोळोव्नु,
पांय पोणु तो निंगीत जल्लो।
तुम्हीं यें कसलें करतात? यें केल्यारि असिलें फल इत्तें?...
प्रभो! वर्णन कोर्का।
सत्यनारायण देवाले व्रत यें। सर्व अभीष्टय प्रदान कोर्चे। तजे प्रसादान मक्का प्राप्त जलेलें तें हें धन धान्य सर्वीय।
ये व्रता पस्सून ऐकून ते रकूडा व्यापारीक बहु सन्तोषु जल्लो। व्रताचो प्रसादु खाव्नु
अनि तान्नयि निवारण कोर्नु तो नगरान्तु पवलो।
सत्यनारायण देवाक मनान्तु उडगासु केलो।
मत्यार रकडा काटु दोवोर्नु तो
अतिमनोहर अनि धनवन्त जन रबुचे नगरान्तु पैलो।
ग्रामान्तु ये विकून मेळचे दुढ्वान श्रेष्ठ असिले ये सत्यदेवाले व्रताचे अनुष्ठान कोर्का।
त्या दिवसु रकडाक
चढ दुढ मेळे।
तजान प्रसन्न जावनु,
पिकल्ली केळीं,
सक्कर, तूप, दूध
अनि गोवाँचो
रुल्लाऊँ सग हाणु,
सपादु पाचक केल्लें।
मगीरि बन्धु-बान्धव सहित विधिप्रकार भक्तीन व्रताचे अनुष्ठान केल्लें।
ते व्रताचे प्रभावान करतना तक्का धन, पुत्र, इत्यादि सौभाग्य मेळे।
ये लोकान्तूले सर्व सूखय भोगून उपरान्त सत्यलोकाक प्राप्त जल्लो।
सत्यनारायण व्रत कथेचे सत्यनारायण देवु अनि विप्र जान्नु असिले सवांदाचो दुसरो अध्यायु

॥ तिसरो अध्यायु ॥
हे ऋषियों! तें जतरी असलो कथा संगता। ऐक्का। फूडे 'उल्कामुख' नावांचो एकु बुद्धिवन्तु रायु अस्सिलो। सत्यसन्दूय अति प्रसिद्धय जाव्नु असिलो
तो रायु दिसांदीस देवळान्तु एव्नु दुढ दान कोर्नु ब्राह्मणांक संतोषु करतालो।
तंगेली धर्मपत्नी सुन्दरी, पद्माक्षा तोंडाची अनि पतिव्रता...
तो रायु पत्नी सहित भद्रशीला नदी तीरार सत्यनारायण देवाले व्रत अनि पूजन करतालो। ते समयार थंगा एक "साधु" एवनु पवलो- तो व्यापाराक नाना प्रकाराचे द्रव्यान भरलेली धोणी समुद्र तीरार अडलाऊनु रय्या लगी एव्नु पौलो। रायु व्रत करता पाळोव्नु विनयान ताणें निंगीले।
राजन्! तुम्हीं भक्ती-युक्त जाव्नु यें कसलें करतात? सग संगूका। ऐकूक आग्रहु पांवता।
हे साधो। अत्यन्त तेजस्वी विष्णु देवालि पूजा अम्मी बन्धुजन मेळनु पुत्र प्राप्तीचे इच्छेन करतात।
विस्तारपूर्वक सग वर्णन कोर्का। मक्काय संन्तान नां। ये व्रता प्रभावान अवश्य जतलें।

व्यापार कोर्नु तो साधु संतोषान पर्तून घरकडे पवलो। बायले लगि सन्तान मेळचे ये व्रता पस्सून सर्वे संगीले।
चेर्डूअँ जल्यार ये व्रता अनुष्ठान कर्ता म्होणु लगि ते साधुन उत्तमशील अनि पतिव्रता धर्मपत्नी लीलावती लगी संगीले। एक दिसा दोगयँ आनन्दान असिले समयार सत्यनारायण देवाले कृपेन लीलावती गर्भवति जल्ली। धावे मासान्तु एक चेल्ये चेर्डाक जन्मु दिल्लो। ती शुक्लपक्षाचे चन्द्रमा समान वडून ऐलो। ते कन्यकेक कलावती म्होणु नाँव घल्लें। तस्सि अस्तना एक दिसा....
हे स्वामी! फूडे कोर्का म्होणु संकल्पु, केलेले व्रत करनात कसल्याक?
प्रिये! तिगेले विवाहाचे समयारी आंका व्रत कोरू
अस्सि बयलेक आश्वासन कोर्नु तो साधु नगरान्तु प्रयाण कर्तलो जल्लो।
कन्या कलावती बपसूले घरल्यान्तु वढ्नु अयिली। धुवेक पोळोव्नु, धर्म कोळचो ते साधून मित्रांच लगी विचारु कोरुनु दूताक उल्दीलो अनि संगीले।
नगरान्तु कन्येक औसलो वरताक पळोय।
आज्ञा ऐकिले मात्रान दूतु काञ्चनपुरान्तु पवलो। थंगाचे एक वैश्यपुत्राक घेव्नु एयलो।
गुणवन्तु अनि सुन्दरु ये वैश्यकुमाराक चोवनु बहु सन्तोषु पावनु विधि प्रकारी विवाह कोरनु दित्तलो जल्लो।
तदनन्तर..... अभाग्यवश तो साधु उत्तम ये व्रत त्या समयारी कोरूक विसर्लो। देवाक होड्डू कोपु ऐलो। व्यापारान्तु कुशल तो साधु जाँवयि सहित समुद्रतीरारी अस्सिले अतिरम्य रत्नसार देशांतु एवनु व्यापारु प्रारंभु करता जल्लो।
ती दोगेंय चन्द्रकेतु रय्याले सुन्दर नगरीन्तु एव्नु पौले।

साधु आन जाँवाय अस्सिले स्थलार पवलो।
तो चारु मगलान फाटि घेवनु एम्चे राजदूतांक दिवकून भीती पावनु धन थंगा उडकावनु स्वयं निपलो।
ते दूत सज्जन साधु लगी एवनु पौले।
सत्यदेवाले मायेन कर्तना हंत्रि संगीलें कोण ऐक्कुक गेलेनात। तंगेले धन सग रायु चन्द्रकेतुन राजभण्डारान्तु कळें।
देवाले शापान करतना तंगेले घरकडे वायलाय अन्यन्त दुःख भोगतलि जल्लीं। घरान्तु अस्सिलें धन सग चोरांनि अपहरण केल्लें। आधि-व्याधि लगून भुकेन- तान्नेन व्याकुल जावनु दुःख भोगीलि। अन्न मगुक तीं घर घर भोंवर्तालि जल्लीं। कन्या कलावतीय दीसुसगळो घुमतालीं।

एक दिस्सा भुकेन व्याकुल जावनु ती एक ब्राह्मणाले घरकडे चोणु गेली। थंगा सत्यनारायण देवाले व्रत अनि पूजा जताली।
तें पोळोन्नु थंगा बेसुन कथा ऐकुनु ते देवालगी वरु मगीलो। प्रसादु भक्षण कोर्नु ....
रत्ती घरकडे ऐली। आव्सु लीलावतीन कन्या कलावती लगी स्नेहान निंगीलें.......
धुवे! तू इतुलि राती खयीं अस्सिलो? तुगेले मनान्तु कस्सलें अस्स?
आव्सु! एक ब्राह्मणाले घरकडे मनोवाञ्छित फल दिंचे व्रत कोर्चे पळेलें।
कन्यकालि यीं वचन ऐकुनु व्रत कोरुक लीलावतीन निश्चयु केल्लो। तें स्त्रीयेन बन्धु - बान्धव सहित व्रत कोर्नु प्रार्थना केल्ली।
भर्तारु अनि जाँवयि शीघ्र घरल्या पावोंय देवा। तंगेले अपराध सग क्षमा कोर्का।
असि दुसरीय दुसरीय सत्यदेवालगि वोरु मगिलो।
ये व्रतान प्रसन्न जावनु सत्यनारायण देवान चन्द्रकेतु रय्याले स्वप्नान्तु एव्नु संगीलें.......
हे राज श्रेष्ठ! काराग्रहान्तु घलेले दोन्नीय वैश्यांक सक्काणि मोचन कोरुका। तंगेलें धन इत्यादि पर्तून दींका। असि केलेले ना जल्यार.... तुगेले राज्य, धन, सन्तान सग नाशु जत्तलें।
यें राया लगी संगून प्रभु अन्तर्धान जल्लो। हंदुंसा सक्काणि रय्यान तगेले स्वजनसमेत अस्सिले सभा मध्यान्तु दिक्किले स्वप्नाचा पसून संगीले।
काराग्रहान्तु अस्सिले दोन्नीय महन्त वैश्य जनांक शीघ्र मुक्त कराय।
रय्याली आज्ञा (आदेश) मेळ्नु राजदूतानि दोन्नीय वैश्यांक मुक्त कोर्नु हळे। अनि विनयान् संगीले।...
दोन्नीय् वैश्यांक मुक्त कोर्नु हाळा हे प्रभो!
देवाले कोपु तँ तुम्गेले महादुःखाक कारण। अनि तुम्का भीति नक्का
दोगानीय राजा चन्द्रकेतूक प्रणाम केलें। सुर्वेचे वृतान्त स्मरण कोर्नु दोगांकय भय्यान उलोंचाक जल्लेना। दोनीय वैश्यांक पोळोन्नु रय्यान प्रेमपूर्वक संगीले।......
अनन्तर तंगेले बन्धन सोडोवुनु क्षौरकर्मादिक करयिलें। वस्त्र अलंकार दीव्नु मधुर जावुनु अस्सिले उत्तरानि सन्तोषु केल्लो। मान-सम्मान केलों। इतूलें धन तंगेले कळेलें की तजे दोनी वंट्यानी पर्तून दिल्लें। तजे उपरान्त रायान-संगीलें - "हे साधो। तुम्हीं तुंगेले घरल्या वचात्।" प्रणाम कोर्नु ते वैश्यानीं संगीले "तुंगेले प्रसादान अम्मि वतात्" असि संगून ते दोन्नीय महाव्यापारि (वैश्य) घरल्याक् चक्कतले जल्ले।
सत्यनारायण व्रत कथेचे
साधु-बन्ध मोचन म्हळेले तिसरो अध्यायु

WORLD KONKANI LIBRARY

साधून जाव्याँ लगी म्हळे :-
मेगेली रत्नपुरी चोय्!
अपण्याले धन रक्षकाक दूत जाव्नु घरल्या पेटेय्ला।
ये दूतान् नगरान्तु वोचूनु साधूले धर्मपत्नी लगि साधूलो संदेश ऐकेलो।
बन्धु-बान्धव सहित बहु धन घेव्नु अनि जाँवयि नगरा लगि पावले।
हाँव भर्तारले दर्शनाक् वत्ता। तुवैं वगी यो।
दूताले तोण्डान्तुलान यीं वाक्य ऐकून लीलावती अत्यन्त हर्षित जल्ली। सत्यपूजा विधिवत् कोरूक धुवेलगी संगीले।
औसूलीं यीं वचन ऐकून कलावतीन् कसींपूणी व्रत समाप्त केलें। प्रसादु परिप्यागु कोर्नु.....
अपण्याले पतीक पोळोंव्याक घेली।
तिगेलो यो व्यवहारु पोळोव्नु सत्यदेवान् तिगेलो पति अनि धन समेत धोणी नदीन्तु भुडोव्नु सोळी।
तवळी कलावती अपण्याले पतीक् चोंव्नत्तिलें शोकान् रोडूक् प्रारम्भु केलें। रोणु रोणु ती भुंयचेरी पळी। कन्याली यी स्थिती चोव्नु अनीक धोणी बुडल्लीं पोळोव्नु भयभीत जाव्नु चिन्तन केल्लें: "यें कसलें आश्चर्य? सगटय विचारान निमग्न जल्लीं।
ते वेळारी लीलावती अपण्याले कन्येक दुःखान्तु भुडल्लीं चोव्नु अत्यन्त दुःखान् विलाप कोर्नु पती लगी संगीलें......
यें कसलें आश्चर्य?
ये वेळेरि जाँवयि समेत धोणी कसीं अदृश्य जल्लें? खंचे देवाले कोपान कर्तना अस्सि जलें म्होणु कळ्ना! सत्येदवाले माहात्म्य मनान्तु कोरूक् कोण की समर्थ?
असि संगून, ती स्वजनै ओटु मेळ्नु विलाप कोरुक लगली। तवळी अपण्याले धुवेक वोण्टींतु निद्करान्नु रोढुक प्रारम्बु केलो। पति नष्ट जलेले दुःखान कलावती बम्णाले वटेक् वोचाक निश्चयु केलो। कन्यालि स्थिति चोवनु स्त्री सहित सज्जन वैश्यु अत्यन्त शोकाकुल जाव्नु चिंन्ता कोरूक लगोलो।
सत्यदेवान तँ तक्का अंगेलगी थकुन व्हेला। ना जल्यार सत्यदेवाले मायेन हाँव भ्रान्त जल्ला। शक्ति तकीत सत्यपूजा हाँव कर्ता।
अपण्याले मनोरथ सगटा लगीय संगीले। दुसरीय दुसरीय सत्यदेवाक दण्डवत् प्रणाम केलें। दीनजनालो परिपालकु सत्यदेवु सन्तुष्ट जलो। भक्तवत्सल देवान कृपापूर्वक यें वचन संगीलें।
हे साधो! तुगेली कन्या, पतिक् चोंवचे धृतीन मेगेलो प्रसादु परित्यागु केल्लो। तें तँ तिगेलो पति अदृष्ट जल्ला। घल्र्या वोचुन प्रसादु स्वीकारु कोरनु पर्तुन एना फुडे हे साधो! धुवेक तिगेलो बम्मूणु मेळतलो। अन्तु कार्यी संशयु ना।
कन्येन ती आकाशवाणी ऐकीली। तवळीचि शीघ्र जाव्नु घल्र्या वोचुन प्रसादु भक्षण कोर्नु ऐली। एना फूडे अपण्याले पतिक दिकीलो। तवळि......
"बप्पू! घल्र्या वचाक अनीक इत्याक तोडोवु कर्तात?"
कन्यालिं यी वाक्य ऐकूनु साधु प्रसन्न जलो। विधिप्रकारी सत्यदेवाले पूजन कोर्नु तो वैश्यु, बन्धु जनै जाव्नु घल्र्या गेलो। ते दीसु थकून, साधून पौर्णमासी अनीक संक्रान्तिक, सत्यनारायण देवाले पूजन कोरुक प्रारम्भु केल्लो। तजान कर्तना तो साधु ये लोकान्तु सुख भोगून ते उपरान्ते सत्यपुराक् चम्कोलो।
॥ सत्यनारायण व्रत कथेचे साधु गृहागमन म्हळोलो चौत्तो अध्यायु ॥

॥ पंचवो अध्यायु ॥
हकाचि सम्बन्धित जाव्नु एक असलोच् कथानक संगन्। हे महर्षियों! तें तुम्ही ऐकात्। प्रजापालन कोरुक तत्पर जाव्नसिलो तुड्गध्वज नावांचो एक रायु अस्सिलो। सत्यदेवाले प्रसादाक् अपमानु कोर्नु तोवै अत्यन्त दुःख भोग्तलो जल्लो।
तो रायु एक दीसु वनान्तु वोचूनु अनेक मृगांक मारनु वट वृक्षाचे मूळाक् ऐव्नु चोयता की .....
घेव्नु वच तेकडे।
बन्धु-बान्धव सहित, भक्ति युक्त जाव्नु, गोपबालक् सत्यदेवाले पूजन करतात्। रायु अहड्कारान् चोय्लो। थंगा गेलोलोय ना। नमस्कारु घललोय ना। तदनन्तर गोपबालकानी रय्या मुक्कारि प्रसादु हाणु दवर्लो।
गोपबालकानी प्रसादु स्वयं ग्रहण कोरुक प्रारम्भु केल्लो।
तो प्रसादु परित्यागु केल्ले पसावत् रय्याक् होड दुःख भोगूका जल्लें। तगेले 100 पुत्रयँ नष्ट जल्लें। धन-धान्य नष्ट जल्ले।
संशयु ना। सत्य देवान् तँ यें नष्ट केल्लां।
खर्यी की सत्यदेवाक पूजन् करतात् हाँव थयी वत्ताँ
तदनन्तर् ये रय्यान् गोपबालकालें संघान्तु वोचूनु तंगेले ओटूच भक्ति श्रद्धायुक्त जाव्नु प्रभु सत्यदेवाले पूजन केलें।

सत्यदेवाले प्रसादान् तो पुत्र धन इत्यादीन परिपूर्ण जाव्नु ये लोकान्तुले सुख भोगूनु तत् पश्चात् सत्यपुराक (वैकुण्ठाक) प्राप्त जल्लो। कोण की परम दुर्लभ जाव्नु अस्सिलें यें व्रत कर्तांति जल्यार, अनीक् कोण की परम पवित्र जाव्नु अस्सिलें, समस्त फल दिंव्वी यी कथा भक्तियुक्त जाव्नु श्रवण करतात् जल्यार्, सत्यनारायण देवाले कृपेन् कर्तना धन-धान्यान् परिपूर्ण जत्तोलो। दरिद्राक धन मेळतलें। बन्धनान्तु असिलो बन्धनान्तु थक्कूनु मुक्त जत्तलो। भय पवलोलो भयान्तु थक्कून मुक्त जत्तलो। यें सत्य तँ। संशयु नक्का। तो व्यक्ती मनोवांच्छित फल भोगतलो। मगीरि वैकुण्ठाक प्राप्त जत्तलो। हे ब्राह्मणों ! सत्यनारायण व्रताचि विधि, फल अनिक् कोणकोणे ये व्रताचे अनुष्ठान केलेंलें, यें सग ... च्चे लगी संगीलें। ये व्रत कोर्नु मनुष्यु सर्व दुःखान्तु थक्कूनूयीं मुक्त जत्तल्लो। विशेष जावन् ... रायणाली पूजा फल दिंची तँ। एर्दी जन येचि देवाक् 'कालु' 'सत्य' 'ईश' ... ी असिलीं 'सत्यदेव' म्हणतर्नी। इत्या मळ्यारि यो प्र... नाना रू ... ना। कलियुगान्तु सत्यव्रतरूपी जावनु सनातन ... अरतोलो ... धोर्नु विष्णु सगटालीय मनोकामना पूर्ण करता। हे म... कोण की यी ... तु, सत्यदेवाले प्रसादान करतना तंगेले सग पापय न... ...।

|| सत्यनारायण व्रत कथेचे तुड्गध्वजाली कथा वर्णन कोर्चे पंचवो अध्यायु ||

|| श्री सत्यनारायण व्रत कथा समाप्त जत्ता ||

आरती

जय लक्ष्मीरमणा देवा श्री लक्ष्मीरमणा।
सत्यनारायण स्वामी जय वेंकटरमणा ।। जय....।।

नारदु वीणा वजूनु म्हणता नारायणा।
अनन्त शयना देवा श्रीमन्नारायणा ।। जय....।।

कोडि तोरण मन्दुनु नगरी चन्द जल्या ।
सज्जन बान्धव मेळुनु तुझी पूजा केल्या ।। जय....।।

श्रद्धा भक्ती पूर्वक एय्लांय तुझे शरण ।
सत्यनारायण पूजन कथेचे पारायण ।। जय....।।

सपाद निवेदु कदळी समर्पिल्यां ।
धूप दीप दक्कोव्नु आरति अम्मि केल्यां।। जय....।।

सदा मंगल जाओ। सदा चांगपण जाओ।
जय वेंकटरमणा । श्री लक्ष्मीरमणा ।। (जय)।।
नारदु वजूनु वीणा। मण्ता नारायणा।
देवा संकट हरणा। श्रीमन्नारायणा।। (जय)।।
कोडि तोरण मन्दुनु। बन्धु बान्धव मेळुनु।
एत्तायि तुगेले शरण। कोर्का तूं उद्धारण।। (जय)।।
सपादु निवेदु कोर्नु। केळीं कदळीं समर्पूनु।
तुक्का करता नमस्कारु। तूं कोर्का स्वीकारू।। (जय)।।
धूप दीप दक्कोव्नु। व्रतकथा वचूनु।
तुझी सेवा केल्या। स्वता मिगेले घल्यां ।। (जय)।।
पूजा तुळसी दळानि। चोव्नु रुप दोळयानि।
मन्त्र म्हणताति तोण्डानि। अय्कुन घंटे ध्वनि।। (जय)।।
दक्कोव्नु आरति भक्तीन। म्हणता गुण गान।
दीव्नु मंगल दर्शन। कोर्का मार्ग दर्शन।। (जय)।।

गोश्रीपुरं हरिकुमार (39)।
सगरी चित्तरंजन नायक म्होणूय उल्दीताय।
विद्याभ्यासु - बी. कॉम
काम - इन्डियन बैंक, सर्कल ऑफिस, एरणाकुलम।

1992 - **'कवनां झोल्लो' 'फुलां अनि कळे'**
(सारस्वत यूत्स् अस्सोसियेषन प्रसिद्धीकरण)
1999 - **'काव्योद्यान'**
(श्री. शरतचन्द्र शेणै प्रसिद्धीकरण)
} हन्तु कोंकणी कविता उजवाडा आयलात।

1998-1999
1999-2000
2000-2001
2002-2003
} नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक)- कोच्चि हंगेले गृहपत्रिका 'सागर संगीत' हन्तु हिन्दी कविता उजवाडा आयलात।

1999 - **'श्री वेंकटेशायनम्'**
(विद्यानगरीन्तु थकूनु श्री वेंकटपति कोच्चि एवनु पवलेले चरित्र विवरण कोर्चे काव्य) ये पुस्तकान्तु चित्र सोडवायँला।।

गोश्रीचैतन्य

(एक चारिटेबळ ट्रष्ट)

पौष मासु 11, 1925 (Ist January 2004), बृहस्तारा 11 वरारि 'सद् विचार, सद् विकास' म्हळेले आदर्श दवोर्नु सामाजिक - सामूहिक - आर्थिक - सांस्कारिक अस्सि सर्व तराचे उन्नति लक्ष्य दवोर्नु "गोश्रीचैतन्य" (एक चारिटेबळ द्रस्ट) चे रूपीकरण जल्या। शुभारम्भु 'श्री सत्यनारायण व्रतकथा- सचित्र कोंकणी भाषान्तर' म्हळेले यें पुस्तक, सर्वांक सर्व अभिवृद्धीय मगूनु घेवनु, प्रसिद्धीकरण केलां। देवाली दया सदा अंका मार्गदर्शक अस्तली। अनि जनाले सहकरण, प्रचोदन अस्तलें।

कोंकणी भाषेन्तुले प्रथम चित्रकथा, भाषा वडूका म्हळेले उद्देशाक अंगेले सान योगदान। अनिकय मुक्कार अस्सले रचनात्मक अनि क्रियात्मक योगदान अंगेले भागा थकून अस्तले।।

यें पुस्तक प्रकाशन (उजवाडप) कोरूक अनुमति दिल्लेले "अखिल भारतीय कोंकणी परिषद - 24 वें अधिवेशन' हज्जे समिति लगि अम्मि आभारि।।

अनिल कुमार एन. प्रभु
बी. बालगोपाल शेणाय
एस. योगीन्दुनाथ किणी
एस. चित्तरंजन नायक